48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि
के महाभारत सम्बन्धित तीर्थ
महाभारत तीर्थों का परिक्रमा मार्ग
CLICK HERE

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि का महाभारत सम्बन्धित तीर्थ मानचित्र

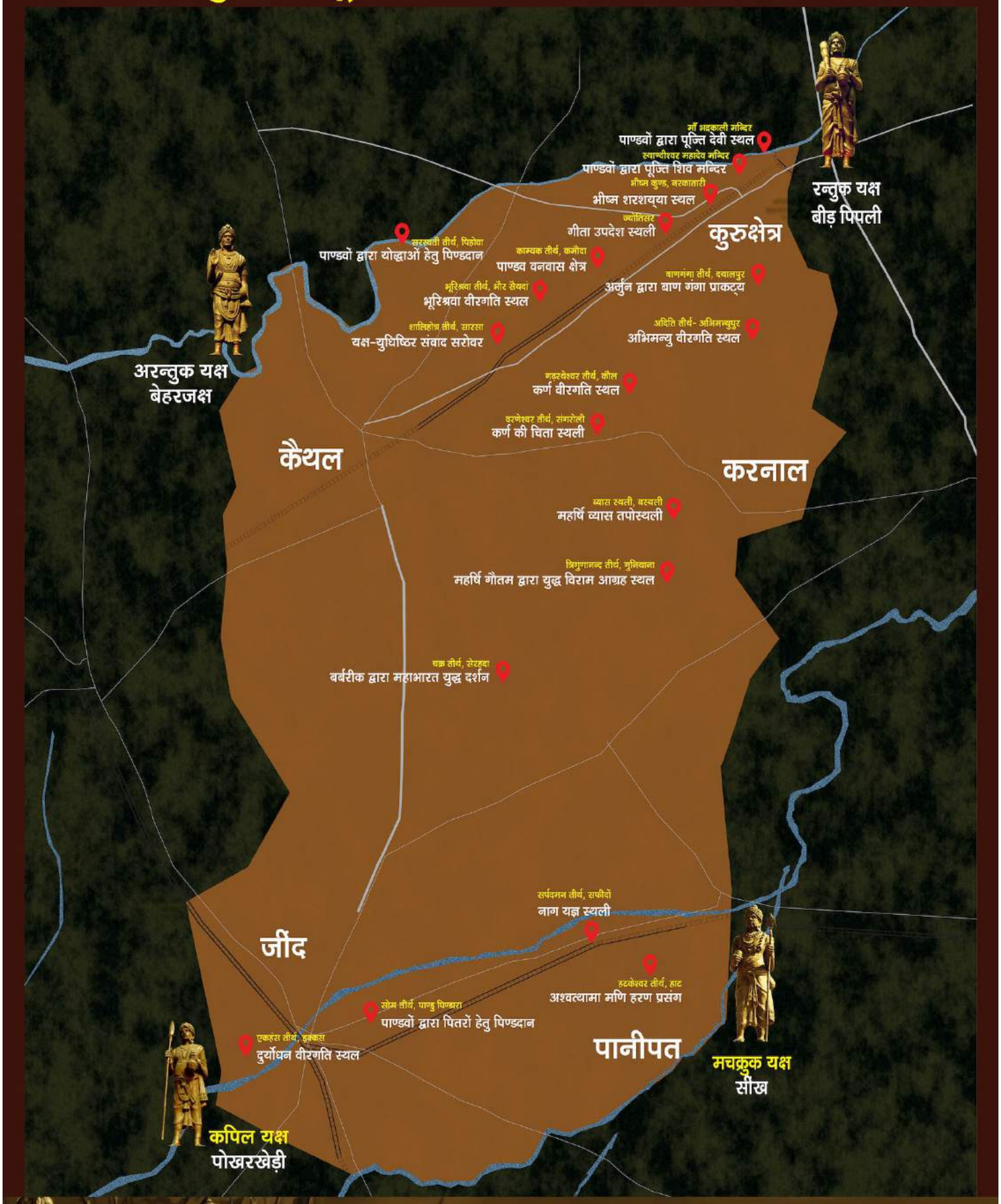

गीता जन्मस्थली- ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र

अर्जुन को विराट रुप दिखाते हुए भगवान श्रीकृष्ण

महाभारत युद्ध से पूर्व इसी स्थल पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश दिया गया था। इसी स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने गीता उपदेश देने के मध्य अपना विराटस्वरूप अर्जुन को दिखाया था।

भीष्म कुण्ड, नरकातारी, कुरुक्षेत्र

यहां शरशैया पर लेटे भीष्म पितामह नें युधिष्ठिर को राजधर्म की शिक्षाएं दी तथा भगवान श्रीकृष्ण का वन्दन विष्णु सहस्रनाम से किया।

शरशैया पर लेटे भीष्म पितामह द्वारा युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश

अदिति तीर्थ, अभिमन्युपुर, कुरुक्षेत्र

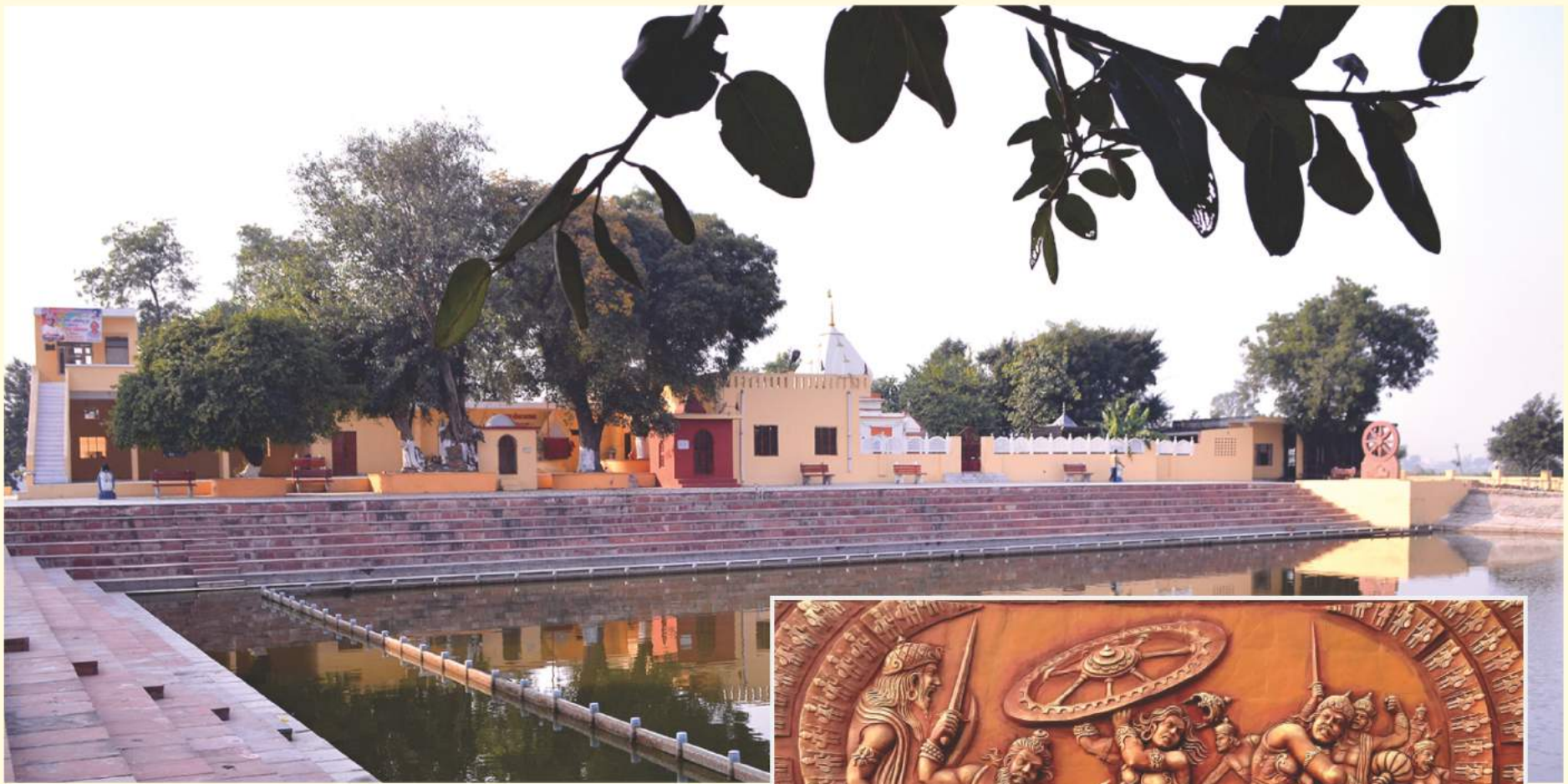

चक्रव्यूह में अभिमन्यु

महाभारत युद्ध के तेहरवें दिन कौरवों द्वारा रचित चक्रव्यूह का भेदन करते हुए अर्जुन पुत्र अभिमन्यु। अभिमन्यु यहां एक साथ कौरव सेना के सात महारथियों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

चक्र तीर्थ, सेरहदा, कैथल

इसी स्थल पर महाभारत युद्ध से पूर्व घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक ने भगवान श्रीकृष्ण को अपना सिर दान में दिया था। बर्बरीक की इच्छानुसार उसका सिर यहां एक स्तम्भ पर रखा गया था जहां से उसने 18 दिन के महाभारत का युद्ध देखना था।

स्तम्भ के ऊपर रखे कटे हुए सिर से बर्बरीक का महाभारत युग देखना

गढ़रथेश्वर तीर्थ, कौल, कैथल

महाभारत युद्ध के सत्रहवें दिन इसी स्थल पर अर्जुन से युद्ध करते हुए कर्ण के रथ का पहिया धरती में धंसा था जिसके उपरान्त अर्जुन के तीर से वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अर्जुन द्वारा कर्ण पर प्राणभेदी बाण का प्रहार

एकहंस तीर्थ, इक्कस, जींद

महाभारत युद्ध के 18वें दिन दुर्योधन इसी तीर्थ सरोवर के जल में छिपआ था। सरोवर से बाहर निकलने के पश्चात भीम से हुए गदायुद्ध में यहीं दुर्योधन मारा गया था।

भीम और दुर्योधन के बीच गदा युद्ध

हटकेश्वर तीर्थ, हाट, जींद

महाभारत युद्ध के पश्चात रात्रि में द्रौपदी के पांच पुत्रों और पांचालों को मारने वाले अश्वत्थामा को पाण्डवों ने इसी स्थल पर पकड़कर उसके मस्तिष्क पर लगी मणि छीन ली थी।

पाण्डवों द्वारा अश्वत्थामा के सिर से जड़ित मणि लेना

सोम तीर्थ, पाण्डु पिण्डारा, जींद

इसी स्थान पर पाण्डवों ने सोमवती अमावस्या के समय अपने पितरों को पिण्डदान दिया था।

सोमवती अमावस्या पर अपने पितरों को
पिण्डदान देते हुए पाण्डव

काम्यक तीर्थ, कमौदा, कुरुक्षेत्र

पाण्डवों ने अपने वनवास काल का अधिकतर समय इसी तीर्थ से लगते हुए वन में गुजारा था। यहीं पाण्डवों से भेंट करने नारद मुनि एवं भगवान श्रीकृष्ण भी आए थे।

काम्यक वन में पाण्डवों के साथ भगवान श्रीकृष्ण, नारद मुनि एवं ऋषि मार्कण्डेय का मिलन

शालिहोत्र तीर्थ, सारसा, कुरुक्षेत्र

वनवास के समय इसी तीर्थ स्थित सरोवर के तट पर यक्ष और युधिष्ठिर का संवाद हुआ था।

सारस रुपधारी धर्मयक्ष का युधिष्ठिर से संवाद

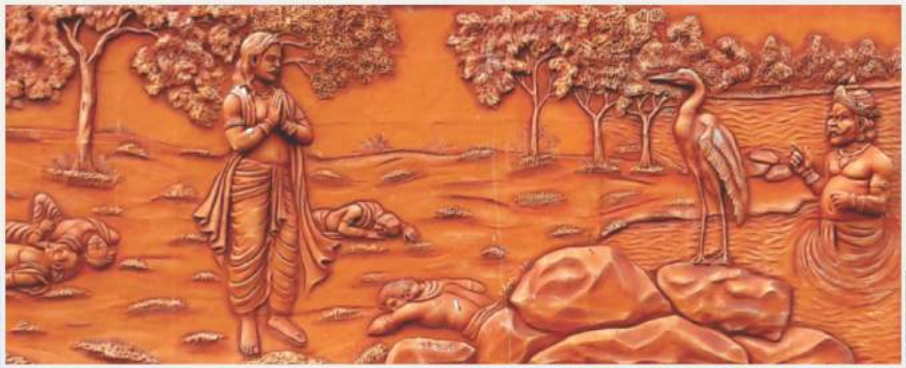

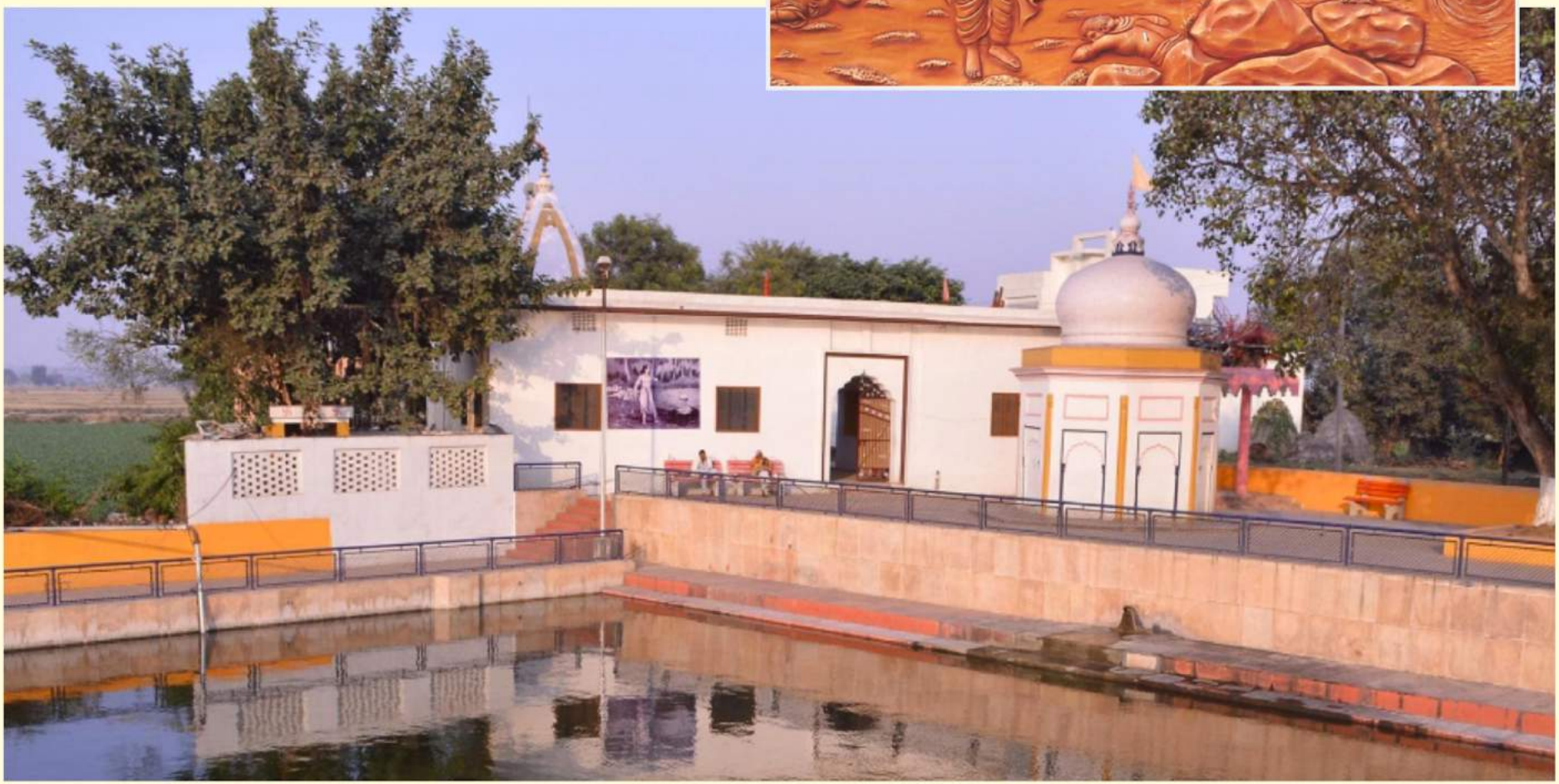

स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, थानेसर

महाभारत युद्ध से पहले भगवान श्रीकृष्ण और पाण्डवों ने इसी स्थल पर स्थाणु रूप में स्थित भगवान शिव की आराधना कर उनसे महाभारत युद्ध में विजयी होने का वरदान प्राप्त किया था।

भगवान श्रीकृष्ण एवं पाण्डवों द्वारा स्थाणु तीर्थ पर शिवलिंग की पूजा

माँ भद्रकाली मन्दिर, कुरुक्षेत्र

महाभारत युद्ध से पूर्व पाण्डवों ने भगवान श्रीकृष्ण के साथ इसी शक्तिपीठ पर भगवती जगदम्बा की आराधना कर उनसे युद्ध में विजयी होने का वरदान प्राप्त किया था। यह हरियाणा स्थित एकमात्र शक्तिपीठ है।

महाभारत से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण एवं पांडवों द्वारा कुरुक्षेत्र में माँ भद्रकाली की पूजा अर्चना

सरस्वती तीर्थ, पिहोवा, कुरुक्षेत्र

महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर नें इसी तीर्थ पर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए सभी योद्धाओं के लिए पिण्डदान किया था।

सरस्वती नदी के तट पर पांडवों द्वारा पिण्डदान

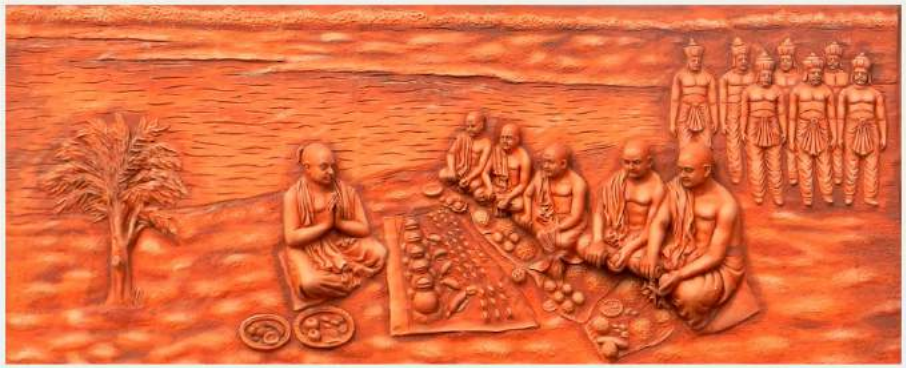

सर्पदमन तीर्थ, सफीदों, जींद

इसी स्थल पर अर्जुन के प्रपौत्र जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित की मृत्यु का बदला लेने के लिए नागों के सर्वनाश हेतु नागयज्ञ किया था।

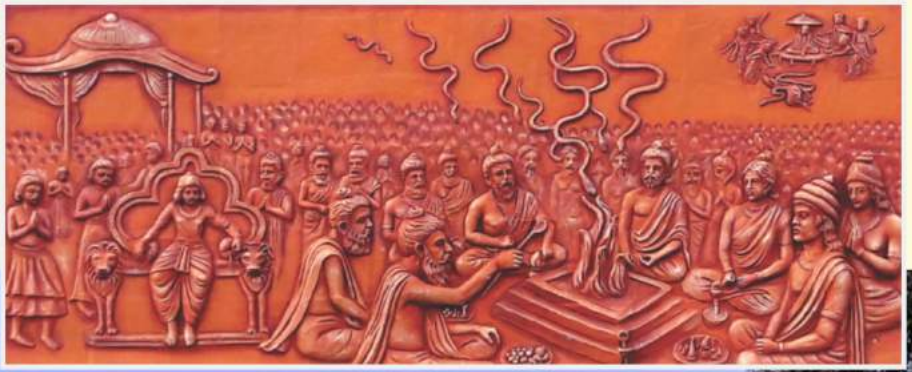

जनमेजय का नाग यज्ञ

व्यास स्थली, बस्थली, करनाल

यह स्थल महाभारत एवं पुराणों के रचियेता वेदव्यास की तपोस्थली है।

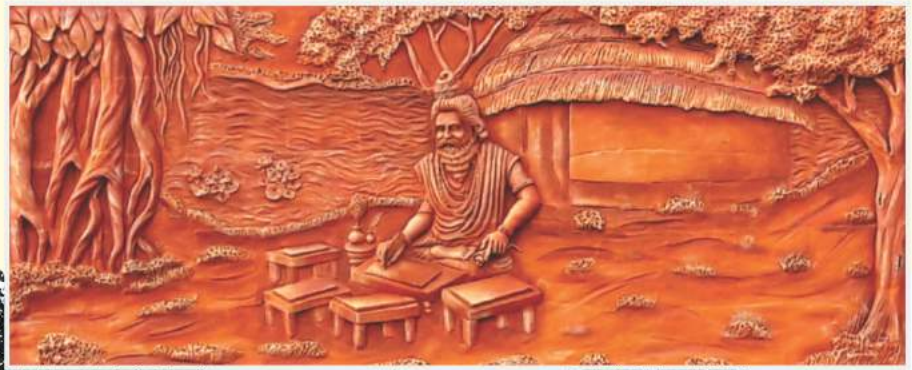

वेदों का संकलन करते हुए महर्षि वेदव्यास

त्रिगुणानन्द तीर्थ, गुनियाना, करनाल

इसी स्थल पर गौतम ऋषि ने महाभारत युद्ध में हो रहे भीषण नरसंहार को रोकने के लिए आचार्य द्रोण के पास जाकर उनसे युद्ध समाप्त करने का आग्रह किया था।

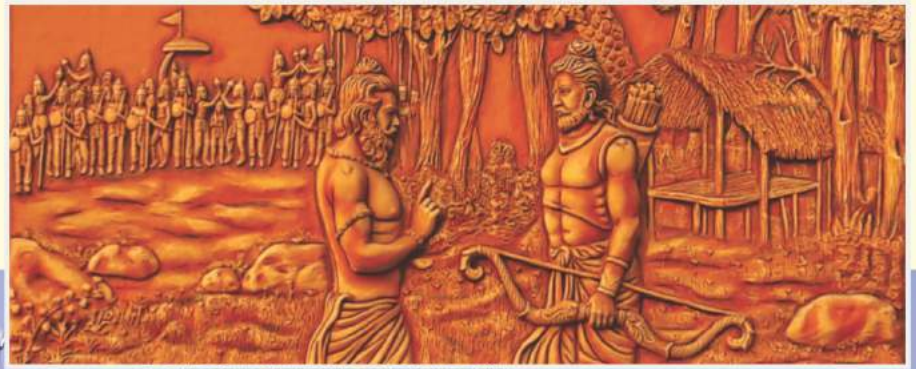

द्रोणाचार्य से महाभारत युद्ध रोकने का आग्रह करते हुए महर्षि गौतम

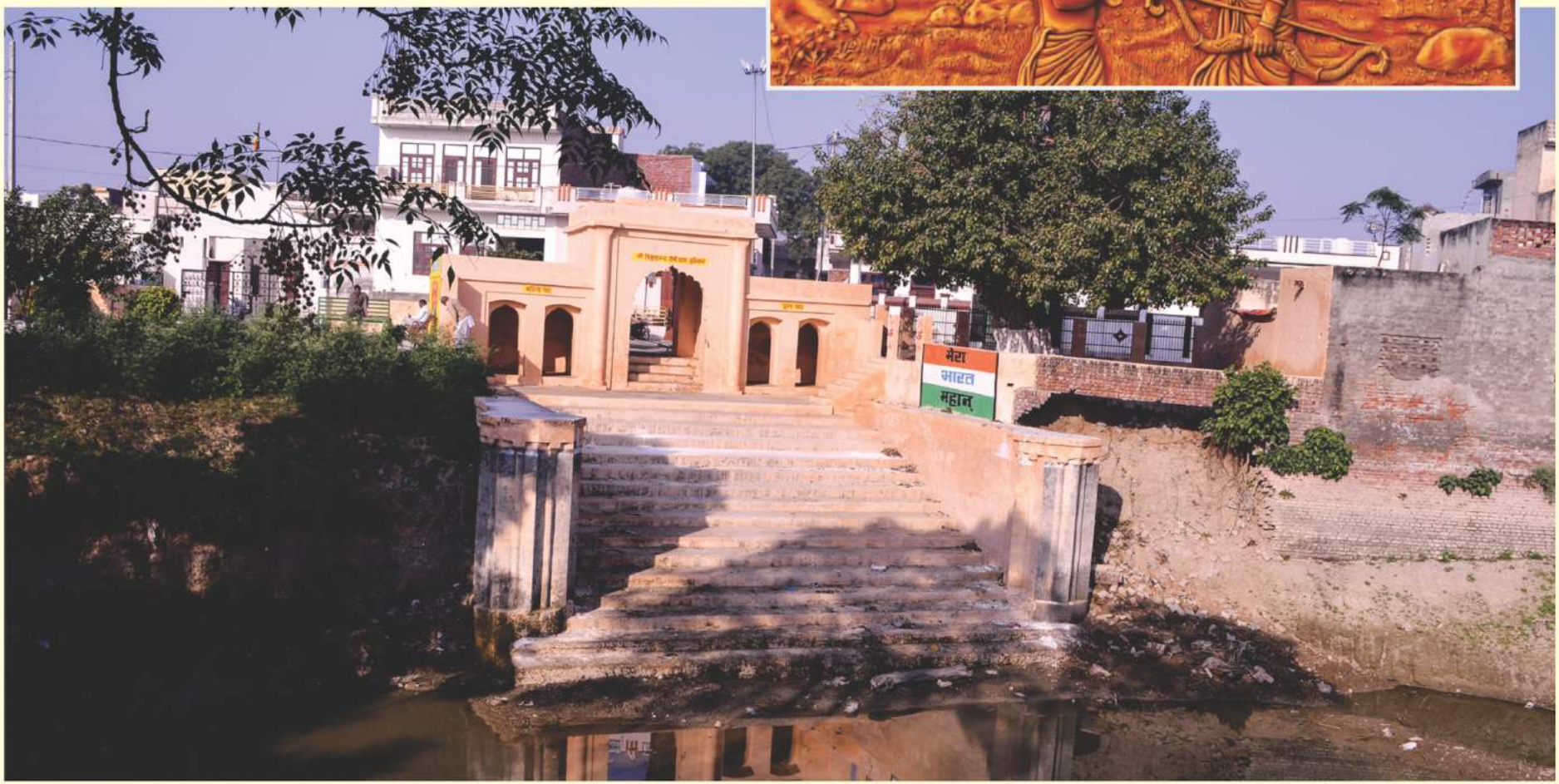

बाणगंगा तीर्थ, दयालपुर, कुरुक्षेत्र

इसी स्थल पर महाभारत युद्ध के चौदवें दिन जयद्रथ वध से पहले अर्जुन ने अपने प्यासे घोडों को पानी पिलाने हेतु धरती में बाण मारकर गंगा प्रकट की थी।

जयद्रथ वध से पूर्व अर्जुन के रथ के घोडों को नहलाते हुए भगवान श्रीकृष्ण

भूरिश्रवा तीर्थ, भौर सैयदां

इस स्थान पर महाभारत युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण के चचेरे भाई महावीर सात्यकि द्वारा धयान में बैठे हुए कुरुवंशी भूरिश्रवा का वध किया गया था।

महाभारत युद्ध में सात्यकि द्वारा भूरिश्रवा का वध